JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संगीत : एक गहन अध्ययन

कु. समिक्षा अ. चंद्रमोरे (एम. ए. संगीतशास्त्र, नेट)
सहा. आचार्य (संगीत विभाग),
ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद.

प्रस्तावना :

संगीत विषय के प्रती जितना लिखो; अध्ययन करो उतना कम है। विज्ञान को समुंदर की गहराई का ज्ञान मिला। समुंदर की गहराई फॅदम से नापी जाती है और लंबाई नॉटीकल मेल से नापी जाती है। लेकीन संगीत में लंबाई नापी तो जा सकती है, लेकीन उसके अंत तक पहुॅच नही सकते। उसकी चौडाई नजर नहीं आती।

भीर्शक : संगीत : एक गहन अध्ययन

उद्देष : संगीत रूची के अध्ययन की खोज करना।

पध्दती : प्रस्तुत संशोधन पूर्ण करने हेतू सर्वेक्षण पध्दती का प्रयोग किया गया है।

कार्यवाही :

100 छात्रों की साक्षात्कार कर उनकी संगीत के प्रती रूची का अध्ययन किया गया । कोई एक व्यक्ती ऐसा न हो जिसे संगीत से लगाव नहीं है, संगीत से चाहत नहीं है। संगीत की चाहत हर एक के दिमाग में होती है। संगीत हर किसी के जिंदगी का अभिन्न हिस्सा है। कविता या नज्म की रचना हेतू किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती उसी प्रकार ध्वनी के गुंजन के लिए भी किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। फिर भी अच्छे ढंग के गीत बनाने हेतू संगीत दिग्दर्शन या प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

हर किसी को संगीत में रूची होती है, इसीलिए संगीत की परिभाषा भी अलग–अलग दिखाई पडती है। संगीत इस विषय को ज्ञात करने हेतू मुझे कुछ घटक की चर्चा यहॉ करनी है।

1. कवी 2. गवैय्या 3. संगीत निर्देशक 4. श्रोतागण

1. कवी :

'जो न देखे रवि, वह देखे कवी।' किसी नज्म या कविता बनाने हेतु किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। कवि के मन में ही गीत की पैदाईश होती है। 'Poetry is a natural outflow from the human hearts' कविता भावनाओंका मुक्त प्रकटीकरण होता है। कविता निर्माण हेतू किसी शिक्षा की भी जरूरत नहीं होती। महाराष्ट्र राज्य में खानदेश नामक प्रांत में बहिणाबाई चौधरी नामक एक मराठी कवयित्री हुई जिसने कभी पाठशाला का मुॅह भी नहीं देखा था, फिरभी कई सारी मराठी रचनाऍ उनसे रचित है। वह इतनी विख्यात हुई की, उनका नाम उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय के नाम के साथ जोडा गया है।

कविता कभी –कभी उसकि वि"ोषताओंके साथ होती है। उसे छंद वि"ोष कहते है। तो कभी बिना किसी व्याकरण के आधार पर धारीत होती है, उसे मुक्तछंद कहलाते है।

कुछ कविताएँ गेय होने की अवस्थाभाव में होती है और गितीकाव्य सुलभ होता है। फैज की कविताओं में संगितात्मकता यानी गेयता बहुत है। कविताओं के शब्द कभी भी अर्थहीन नही होते। गेयता होने कि वजह से कवता समझने में रोचक लगती है। गेयता अगर न हो पर कविता अर्थपूर्ण हो तो उसमें शब्दों का वजन बढ जाता है।

हर एक कविता का अपना विषय होता है, जैसे चॉद, सुरज, हवा, जिंदगी, रोमान्स आदि.. कविता और उसका गायन एक दुसरे को भावनाओं की डोर से बंधा होता है। कविता अगर मधुर गीत के साथ भरी होती है तो उसकी रूची अवीट होती है।

2. गवय्या :

गवैय्या याने गायक। वह व्यक्ती जो संगीत"ाास्त्र का ज्ञाता होता है और पूरी लय के साथ गाता है। हम जब कोई गीत सुनते है तो वह किसकी आवाज है इसमें सबसे पहले रूची दिखाते है।

हमारे हाथ की रेखाएँ जैसे अलग–अलग है, जिसप्रकार हर एक व्यक्ती की चेहरे की रचना अलग–अलग है, उसी तरह हर एक व्यक्ती का ध्वनी अलग–अलग है। मानव एक बुध्दिमान व्यक्ती है। यही तो उसकी पहचान है। किसी भी गीत में गवैय्या का स्थान अनन्य साधारण होता है। सभी प्रकार के साधन गवैय्या के इर्द–गीर्द ही घुमते है। गवैय्ये की वजह से गीत बहारदार होता है, उसमें रंगत आती है और गीत दुबारा सुनने का मन होता है। दुबारा सुनना यह व्यक्ती का पुनरअध्ययन होता है। कुछ व्यक्तीओं को पहली बार सुनने के बाद ही उसका अर्थ समझ में आता है। कुछ को दुबारा, फिर दुबारा सुनने के बाद अर्थ समझ में आता है। किसी फिल्म का गीत सुनने में अर्थ जल्द समझ में आता है। शास्त्र"ाुध्द संगीतीय प्रकार के गानों का अर्थ समझने हेतू संगीत की ि"ाक्षा या प्रि"ाक्षण की जरूरत है, जैसे नाट्य संगीत, गज़ल और शेर–ओ–"ाायरी, आदि..

3. सगीत निदे"ाक :

हर एक गीत को आवाज में तबदिल करने में सगीत निदे"ाक की भूमिका अहंम् है। बनाये हुए हर एक गीत के भीतर एक संगीत निदे"ाक ही होता है। किसी भी फिल्म के शुरू में कई सारे नामों की सुची होती है जिसमें संगीत निदे"ाक का नाम भी होता है। फिल्म के पर्दे के पिछे संगीत निदे"ाक और उसके सहचारी निहीत है। संगीत निदे"ाक जो न सिर्फ किसी गाने को निदे"ाित करता है बल्की फिल्म की पटकथा के संवाद के भितर भी संगीत का माहोल बनता है।

4. श्रोतागण :

किसी सभा आदि में हो रहे भाषण आदि को सुनने वाला व्यक्तीसमुह श्रोतागण कहलाता है। गीत–संगीत बनाया गाया जाता है श्रोताओं के लिए । जिसे रचना समझे वह श्रोता कहलाता है। जिसे कोई रचना ना समझे वह भी श्रोता कहलाता है। श्रोता केवल आनंद लेने हेतू किसी की रचना को सुनता है। गीत के रूप के आधार पर श्रोतागण का एक अलग समुह निर्धारित होता है। पा"र्वगायन में रूची रखकर उसे सुननेवाला श्रोता शास्त्रीय गायन की ओर मुडा हुआ नजर नही आएगा। किसी महफिल गायन में जमा होनेवाले लोग भी श्रोता कहलाता है और रेडिओ पर गाना सुननेवालें लोग भी श्रोता कहलाते है।

सारां"ा रूप में संगीत की साधना मानव के आत्मसमाधान हेतू महत्त्वपूर्ण है।

1. 98 प्रति"ात छात्राओं ने संगीत अध्ययन में रूची जताई ऐसा देखा गया है।
2. संगीत का अध्ययन मानव की एक भूख है।
3. संगीत साधना यह एक बडी कलाकृती है।
4. उत्तम गायन हेतू रियाज की जरूरत होती है।
5. गवैय्या हर किसी गीत का मुख्य आधारस्तंभ होता है।
6. कविता या गीत निर्माण हेतू चिंतन की आधारि"ाला आव"यक मानी गयी है।
7. चिंतन के लिए श्रवण और निरिक्षण प्रभावी रूप से आव"यक होता है।

8. संगीत अध्ययन का अंतरंग अनंत है।

इसप्रकार संगीत विषय का जितना भी अध्ययन करो उतना कम है। संगीत इस विषय की गहराई कई मात्रा में किसी अन्य विषय की तुलना से अधिक है। संगीत जिंदगी है, संगीत जिंदगी जीने की तन्हा है। जितना भी संगीत का अध्ययन करो, उतनी ही उसकी रूची बढती है।